धनत्रयोदशी पर करें

वास्तुदोषों का निवारण

रिहायशी अथवा व्यावसायिक उपयोग हेतु निर्मित इमारत में वास्तु नियमों का जब उल्लंघन होता है, तो उससे वास्तुदोष उत्पन्न होते हैं। वास्तुदोषों के कारण इमारत में निवास करने वाले अथवा उसमें व्यवसाय करने वाले या कार्यरत व्यक्ति शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक समस्याओं से पीड़ित हो जाते हैं। उनकी पीड़ा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित करने लगती है तथा व्यक्ति पतन की ओर उन्मुख हो जाता है। विभिन्न दिशाओं में प्रमुख वास्तुदोष और उनके प्रभाव संक्षेप में इस प्रकार है-

ईशान दिशा (उत्तर-पूर्व)-

ईशान दिशा में अपेक्षाकृत अधिक निर्मित भाग होना, शौचालय-रसोईघर-सर्वेन्ट क्वाट्र-स्टोर आदि का निर्माण होना इस दिशा के प्रमुख वास्तुदोष हैं। ईशान दिशा में वास्तुदोष होने से उस इमारत में निवास करने वाले अथवा कार्य करने वाले व्यक्तियों का भाग्य अवरुद्ध हो जाता है और उनकी प्रगति रुक जाती है। परिश्रम के अनुरुप उन्हें फल नहीं मिलता है। प्रत्येक कार्य में बाधाएँ आने लगती हैं।

पूर्व दिशा-

ढाल का पूर्व से पश्चिम की ओर होना, रसोईघर- शयनकक्ष- शौचालय -स्टोर, सर्वेन्ट क्वाट्र आदि का निर्माण होना इस दिशा के प्रमुख वास्तुदोष हैं। इस दिशा में वास्तुदोष होने से उस इमारत में निवास करने वाले अथवा कार्य करने वाले व्यक्तियों को आपसी संबंधों में तनाव, मानसिक परेशानियाँ, बीमारियाँ, आर्थिक हानि आदि का सामना करना पड़ सकता है।

आग्नेय दिशा (दक्षिण-पूर्व)-

आग्नेय दिशा (दक्षिण-पूर्व कोण दिशा) में शौचालय- शयनकक्ष- नल-कूप-जलस्त्रोत आदि का होना वास्तुदोष उत्पन्न करता है। इस दिशा में वास्तुदोष होने से उस इमारत में निवास करने वाली महिलाओं का स्वास्थ्य प्रभावित रहता है। परिवार के सदस्यों को पेट संबंधी बीमारियाँ होती हैं। दाम्पत्य सुख में कमी का अनुभव होता है।

दक्षिण दिशा-

दक्षिण दिशा में मुख्य द्वार का होना, पूजाघर का होना, जल स्त्रोत का होना, दक्षिण दिशा में अपेक्षाकृत कम निर्माण होना, दक्षिण भाग का खुला रहना, दक्षिण दिशा की ओर ढाल होना इत्यादि वास्तुदोष के जनक होते हैं। इस दिशा में वास्तुदोष होने से गृहस्वामी को शारीरिक कष्टों का सामना करना पड़ता है। उसे सामाजिक अपमान का तथा आर्थिक हानि का सामना करना पड़ता है। ऐसे वास्तुदोषों से युक्त भवन में रहने वाले व्यक्ति की आर्थिक प्रगति रुक जाती है। गृह-क्लेश बढ़ जाते हैं।

नैऋत्य दिशा (दक्षिण-पश्चिम)-

नैऋत्य दिशा (दक्षिण-पश्चिम कोण दिशा) में नल-कूप होना, जलस्त्रोत होना, सैप्टिक टैंक होना, गड्ढ़ा होना, ढाल होना, इस दिशा में निर्माण नहीं होना आदि इस दिशा के वास्तुदोष के कारण होते हैं। इस दिशा में वास्तुदोष होने से उसमें निवास करने वाले या कार्य करने वाले व्यक्तियों को आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ता है। ऋणभार बढ़ जाता है। घर के बुजुर्गो का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है। आकस्मिक दुर्घटनाएँ होती हैं। मुकदमेबाजी का सामना करना पड़ता है।

पश्चिम दिशा-

पश्चिम दिशा में रसोईघर का होना, पूजागृह का होना, गृहस्वामी का शयनकक्ष होना, पूर्व दिशा की तुलना में ढाल का नीचा होना इत्यादि वास्तुदोष के प्रमुख कारण बनते हैं। इस दिशा में वास्तुदोष होने से सामाजिक प्रतिष्ठा की हानि होती है। गृहस्वामी की प्रगति रुक जाती है। व्यय की अधिकता होती है।

वायव्य दिशा (उत्तर-पश्चिम)-

वायव्य दिशा (उत्तर-पश्चिम कोण दिशा) में रसोईघर का होना, गृहस्वामी का शयनकक्ष होना, इस भाग में अपेक्षाकृत ऊँचा निर्माण होना, कोष का होना, भण्डार गृह का होना, मशीनों का होना इत्यादि वास्तुदोष उत्पन्न करता है। ऐसे वास्तुदोषों से धनहानि, माल की बिक्री में मंदी, गृह स्वामी का स्वास्थ्य खराब होना, घर आदि बिकने की नौबत आना, महिलाओं का स्वास्थ्य प्रभावित होना इत्यादि प्रभाव होते हैं।

उत्तर दिशा-

उत्तर दिशा में भण्डार गृह का होना, यहाँ अपेक्षाकृत अधिक निर्माण कार्य होना, उत्तर से दक्षिण की ओर ढाल होना, शौचालय का निर्माण होना आदि वास्तुदोष के कारण बनते हैं। ऐसी इमारत के स्वामी को शारीरिक, आर्थिक एवं मानसिक कष्टों का सामना करना पड़ता है।

ब्रह्म स्थल-

यदि प्लॉट के नौ भाग किए जाएँ, तो उसमें मध्य का जो भाग होता है, वह ब्रह्म स्थल कहलाता है। यह वास्तुदेवता का मर्म स्थल होता है, अतः इस पर किसी भी प्रकार का निर्माण कार्य वर्जित है। साथ ही इसकी शुद्धता का विशेष ध्यान रखना भी जरुरी है। इस क्षेत्र में शौचालय, सैप्टिक टैंक, स्नान गृह, तहखाना,

नल-कूप, शयनकक्ष, स्तम्भ, रसोईघर आदि का निर्माण भयंकर वास्तुदोष उत्पन्न करता है। ऐसे घर के स्वामी अथवा उसमें रहने वाले व्यक्तियों को अथवा ऐसे व्यावसायिक स्थल पर कार्य करने वाले व्यक्तियों को दुर्भाग्य का सामना करना पड़ता है। उनकी प्रगति तो रुक ही जाती है, साथ ही उन्हें शारीरिक सुख एवं पारिवारिक सुख की कमी का अनुभव भी होता है।

उपर्युक्त प्रमुख वास्तुदोषों के अतिरिक्त दक्षिणमुखी भवन, भवन के मुख्य द्वार के समक्ष स्तम्भ, वृक्ष का होना, आस-पास बड़ी इमारतों का स्थित होना, भवन का 'टी' मार्ग पर स्थित होना, नाहर मुखी घर अथवा गौ मुखी व्यावसायिक स्थल होना, ईशान या उत्तर दिशा का कटा होना, आग्नेय, नैऋत्य या दक्षिण दिशा का बढ़ा होना, घर के सामने मंदिर या खण्डहर होना, इमारत का सड़क से नीचे स्थित होना (भवन का गड्ढे में होना) , भवन का मार्ग के घुमाव पर स्थित होना, सीढ़ियों के नीचे शौचालय या भण्डार गृह का होना, सीढ़ियों का वामावर्त होना इत्यादि भी वास्तुदोष के कारण बनते हैं।

वास्तुदोष के निराकरण के उपाय-

जैसाकि हम देख चुके हैं, वास्तुदोष अनेक प्रकार की समस्याओं को जन्म देता है, अतः इन समस्याओं से निजात पाने के लिए वास्तुदोष का निराकरण करना अपरिहार्य हो जाता है। वास्तुदोष का निराकरण दो प्रकार के उपायों से हो सकता है-

नकारात्मक उपाय-

इस प्रकार के उपायों में वे सभी प्रयास सम्मिलित हैं, जिसमें वास्तुदोष के जनक निर्माण कार्य को हटाकर वास्तुसम्मत निर्माण कार्य किया जाता है। उदाहरण के लिए ईशान दिशा में निर्मित शौचालय को हटाकर उसके स्थान पर पूजागृह की स्थापना की जाए। इस प्रकार के उपाय वास्तुदोष को शत-प्रतिशत समाप्त कर देते हैं और उसके दुष्प्रभावों में भी एकदम कमी कर देते हैं, लेकिन ये उपाय नकारात्मक ही हैं। साथ में अत्यधिक व्ययकारी और अव्यावहारिक भी हैं। प्रत्येक परिस्थिति में ऐसा सम्भव नहीं होता है। इसी कारण सकारात्मक उपाय किये जाते हैं।

सकारात्मक उपाय-

इस प्रकार के उपाय में वे सभी प्रयास सम्मिलित हैं, जिनमें मंत्र, तंत्र, यंत्र, फेंगशुई, ज्योतिष अथवा पूजा अनुष्ठान के द्वारा वास्तुदोष के दुष्प्रभावों में कमी की जाती है। इस प्रकार के उपायों से यद्यपि वास्तुदोष के दुष्प्रभाव शत-प्रतिशत तो दूर नहीं होते, किन्तु कल्पनातीत राहत अवश्य मिलती है।

वास्तुदोष के निराकरण के अन्य उपाय-

वास्तुदोष के सामान्यतः निम्नलिखित उपाय किए जाते हैं :

1. वास्तुदेवता की पूजा और उपासना। 2. वास्तुशांति यज्ञ और अनुष्ठान। 3. वास्तुयंत्र की स्थापना। 4. वास्तुदोष कारक ग्रह का उपचार, जिसमें संबंधित ग्रह का मंत्र जप, रत्न धारण आदि कराया जाता है। 5. वास्तुदोष से उत्पन्न दुष्प्रभावों में कमी लाने हेतु तांत्रिक उपाय। 6. फेंगशुई के उपाय।

सामान्यतः वास्तु दोष निवारण के लिए उपर्युक्त में से किसी एक उपाय का सहारा लिया जाता है, किन्तु वास्तुदोषनाशक कवच या वास्तुशांति कलश उक्त में से अधिकतर उपायों को सम्मिलित किया गया है। वास्तु शास्त्रों के अनुसार तोड़-फोड़ की इजाजत हमारी आमदनी नहीं दे पाती, तो इसका अर्थ ये नहीं कि आप निराश और हताश हो, अब हम लायें हैं आपके लिए आसान उपाय.. वास्तु शांति कलश। इस कलश के माध्यम से वास्तुदोष दूर करने का प्रयास किया जाता है। इस बार वास्तुशांति कलश की स्थापना का श्रेष्ठ मुहूर्त्त धनत्रयोदशी (13 नवम्बर, 2020) है। इस प्रकार के श्रेष्ठ मुहूर्त्त वर्ष में केवल एक बार ही आते हैं। इस अवसर का लाभ उठाएँ। ♦♦♦

दाम्पत्य सुख शान्ति पैकेट

कहा जाता है कि इस पृथ्वी पर भी व्यक्ति चाहे तो स्वर्ग सा जीवन बिता सकता है। लेकिन स्वर्ग सा जीवन जीने और बिताने के लिये सबसे बड़ी आवश्यकता होती है पारिवारिक सुख की। पारिवारिक सुख यानी की आपका दाम्पत्य जीवन। यदि व्यक्ति का दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं है तो फिर उसके पास सबकुछ होते हुए भी कुछ भी नहीं है। दाम्पत्य सुख का सम्बन्ध अमीरी या गरीबी से नहीं है। गरीब व्यक्ति भी अपनी पत्नी और बच्चों के साथ सुखपूर्वक रहकर अत्यन्त सुख और आनन्द की अनुभूति करता है वहीं कोई धनवान व्यक्ति सर्वस्व भौतिक सुख सुविधाओं के होते हुए भी पत्नी और बच्चों के साथ सम्बन्ध अच्छे ना होने पर दुःखी जीवन व्यतीत करता है। इसीलिये कहा गया है कि जो व्यक्ति अपने घर में सुखी है वह संसार में सुखी है और जो व्यक्ति घर में दुःखी है उसके लिए सारा संसार बेगाना है। देखा जाये तो आज के समय में वे ही लोग भाग्यशाली हैं जो दाम्पत्य जीवन के सुख को भोग रहे हैं अन्यथा जगह-जगह लोग गृहक्लेश की पीड़ा झेल रहे हैं। किसी की पत्नी सही नहीं है तो किसी के बच्चे कहने पर नहीं है, किसी की अपने पिता से नहीं बनती तो किसी के माता से मतभेद हैं। यदि आप अपने जीवन में दाम्पत्य सुख का पूर्ण लुत्फ उठाना चाहते हैं तो स्थापित कीजिए दाम्पत्य सुख शांति पैकेट और बना लीजिए अपने घर-संसार को स्वर्ग सा सुंदर।

1. क्या आपका दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं है?
2. क्या आप दोनों के बीच वैचारिक मतभेद है?
3. क्या आप गृह क्लेश की पीड़ा झेल रहे हैं?
4. क्या परिवार में अशान्ति का वातावरण है?
5. आपकी पत्नी या पति कहा नहीं मानते हैं?

आप भी उपरोक्त समस्याओं से त्रस्त हैं तो यह पैकेट आपके लिये विशेष उपयोगी है–

इस पैकेट में आप निम्न सामग्री पायेंगे– 1. मातंगी यंत्र 2. आम की लकड़ी का स्वास्तिक 3. जप माला 4.देवी यंत्र पैण्डल 5.मनसा वाचा पिरामिड 6.वास्तु यंत्र 7.सम्पूर्ण विधि

न्यौछावर मात्र 3500 रुपये

आप सीधे ही बैंक एकाउन्ट में भी पैसा जमा करवा सकते हैं।

HDFC Bank A/c No. 014-225-6000-5331

(All Amount Payble at Jodhpur Account)

त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र

'त्रिनेत्र भवन' प्लोट नम्बर–1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज के मैन गेट के पास, जोधपुर (राज.)

फोनः 0291–2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्सः 0291–2618625

E-mail: tantravtj@yahoo.com Visit us: fameandfortune.org